कुल पृष्ठ संख्या–28 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या 03187

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

वरिष्ठ उपाध्याय परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

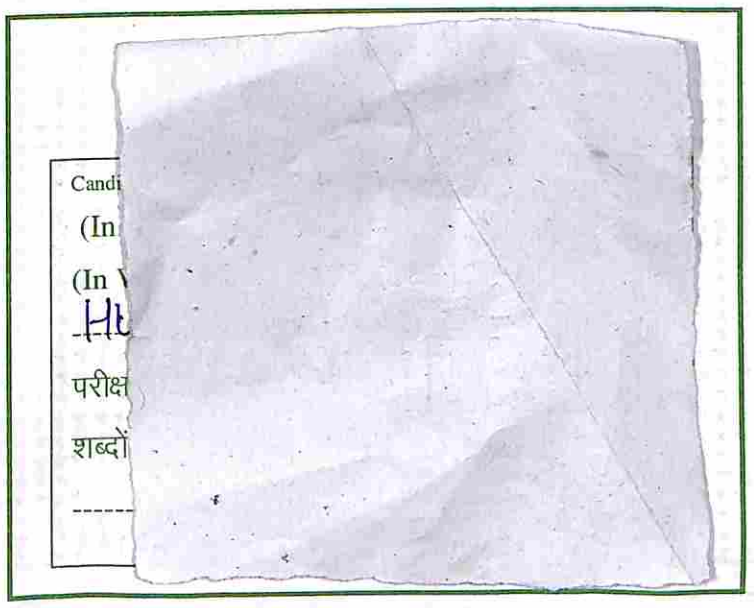

Candi
(In
(In V
HU
परीक्ष
शब्दों

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी ☐

विषय जैनदर्शन

परीक्षा का दिन शुक्रवार

दिनांक 22-08-2022

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	12	19	3
2	5	20	3
3	12	21	4
4	2	22	4
5	2	23	4
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	2	30	
13	2	31	
14	2	योग	79
15	2	प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16	2	अंकों में	शब्दों में
17	3	79	उन्यासी
18	3		

परीक्षक के हस्ताक्षर .... संकेतांक 4 0 0 8 7

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तक के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 166/2019

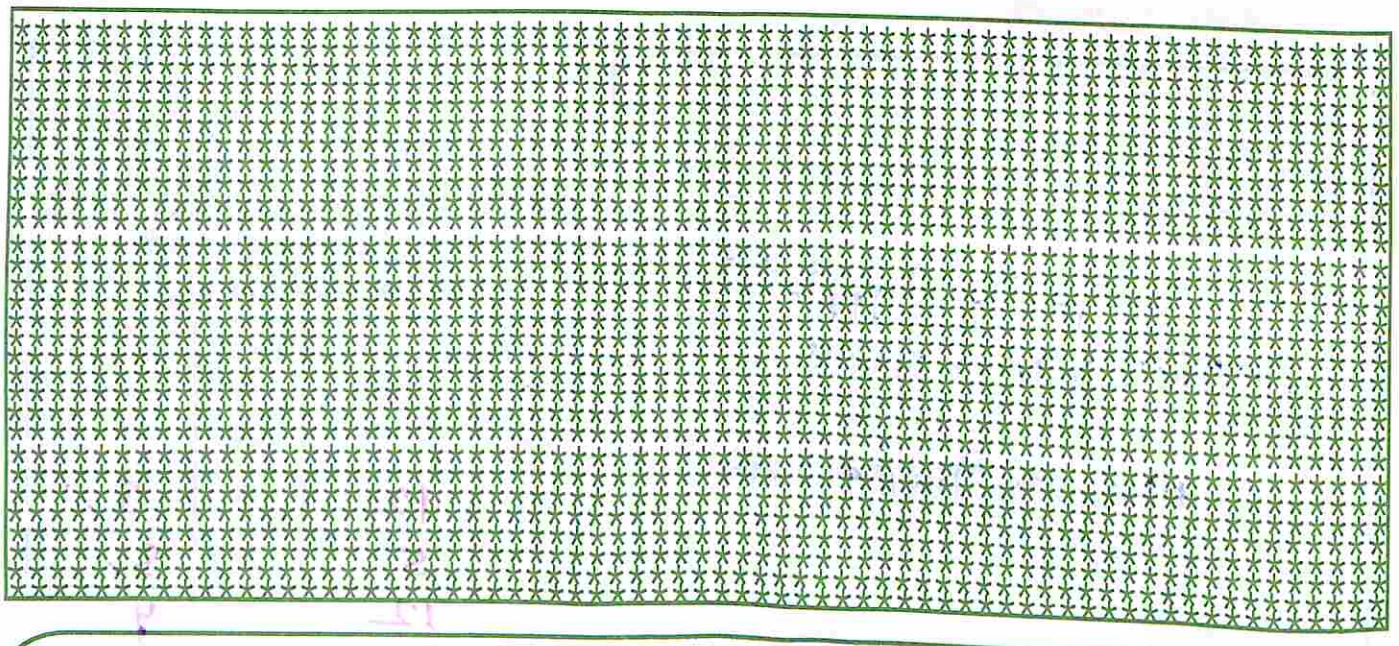

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ भी न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न – पत्र हिन्दी – अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		खण्ड - अ
	1.	
1	i)	→ त्रिविद्या: ।
1	ii)	→ द्विविधम् ।
1	iii)	(अ) → वैशेषिकेन ।
1	iv)	→ प्रभाकरणम् ।
1	v)	→ राजवार्तिक भाष्ये ।
1	vi)	→ निर्दोषत्वात् ।
1	vii)	(द) → प्रत्यक्षस्य ।
0	vii)	(अ) → परोक्षस्य । Repeat

P.T.O.

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	viii) →	स्मृतेः।
1	ix) →	स्मरणम्।
1	x) →	तर्कः।
1	xi) →	साहृयम्।
1	xii) →	परार्थानुमानम्।
12	2.	
1	i) →	आत्मभूतम्।
0	ii) →	सन्निकर्षः।
1	iii) →	व्यावहारिकं, पारमार्थिकं। स्पष्टं साकार

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	iv) →	तत्र तत्र अग्नि मितिः।
+ 1	v) →	यथा पर्वतोऽयं धूमत्वादिति अग्निमिति। उपनय निगमन
+ 1	vi) →	पक्षस्य वचनम्। गम्यमानस्यापि
5	3.	
1	i) →	आचार्य अभिनव धर्मभूषण यतिः।
+ 1	ii) →	आत्मभूत लक्षणम्।
+ 1	iii) →	परत स्वतश्च। स्वग्रामे परिनदिकीनिरस्य अभ्यस्तः विषयः।
+ 1	iv) →	"अविसंवादिज्ञानम् प्रमाणम्"। कल्पना पोढमभ्रान्तं
+ 1	v) →	"पारमार्थिक प्रत्यक्षम्"।
×	iv) →	"अविसंवादिज्ञानम् प्रमाणम्"। Repeat

P.T.O.

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	vi)	→ स्मृति: ।
1	vii)	→ "अनुभव स्मृति हेतुकं सङ्कलनात्मकं ज्ञानं प्रत्यभिज्ञानम्" । सादृश्य
1	viii)	→ अशुभ: तर्क:
1	ix)	→ साधनम् ।
1	x)	→ द्विविधम् ।
1	xi)	→ "प्रमाणसिद्ध: धर्मी:" ।
1	xii)	→ ~~मस्तु~~ प्रतिज्ञा
12		

BSER-166 2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

☆ खण्ड - ब ☆

4\. → "विरुद्धनाना युक्ति प्राबल्य दौर्बल्यव धारणाय प्रवर्तमानो विचारः परीक्षा" । यथा - सा खलु स्येत एवं चेद् एवं स्येत् च प्रवर्तते । — (2)

5\. → "विरुद्ध अनेक कोटि स्पर्शि ज्ञानं संशयः" । यथा- स्थाणुर्वा पुरुषो वेति । — (2)

6\. → "प्र[illegible]व्यभिचारित्वं" । — (2)

7\. → "अनुभूतिः प्रमाणम्" । इति प्रभाकरीयमते प्रमाणस्य लक्षण आस्ति । — (2)

8\. → "विशद प्रतिभासं प्रत्यक्षम्" । यथा- विशद प्रतिभासं लक्षणं, प्रत्यक्षम् लक्ष्यं आस्ति । — (2)

9\. → "स्वावरण क्षयोपशमः लक्षण योग्यता" । — (2)

DSER-166/2019

P.T.O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	10.	→ "इन्द्रिय अर्थ समवधान समनन्तर समुत्य सतालोचन अवान्तर:जाति विशिष्ट वस्तु ग्राही ज्ञान अवग्रह:" । यथा अयं पुरुष: । (अंतरभावी सत्ता)
2	11.	→ "सर्वतो विशद मुख्य प्रत्यक्षम्" । यज्ज्ञानं साकल्येन स्पष्ट विशदमेव मुख्य प्रत्यक्षम् ।
5	12.	→ परोक्ष विधम् - स्मृति: । प्रत्यभिज्ञानम् । तर्क: । अनुमानम् । आगम: ।
2	13.	→ "तदित्याकारा प्रागनुभूत वस्तु विषया स्मृति:" । यथा - स: देवदत्त: ।
2	14.	→ "व्याप्ति:ज्ञानं तर्क:" । यथा - यत्र यत्र धूमतत्वं तत्र तत्र अग्नि: । तर्कस्य अपरनाम ऊह: अस्ति ।

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2	15.	"प्रत्यक्षादि प्रमाणेभ्यः कस्मात् विकस्मात् धर्मिन द्वयेन सिद्धिः प्रमाणसिद्धत्वम्"। यथा - धूमवाग्नि धूमवात्त्वादग्निमत्त्वं साध्यं पर्वतः।
2	16.	स्वार्थानुमानस्य त्रीण्यङ्गानि भवन्ति। 1) धर्मी। 2) साध्यः। 3) साधनः।
		* खण्ड - स *
3	17. क]	मंगलाचरणस्य पञ्च प्रयोजनम् -: 1] स्वकृते शास्त्र निर्विघ्न परिसमाप्त्यर्थम्। 2] शिष्टाचार परिपालनार्थम्। 3] शिष्य शिक्षार्थम्। 4] नास्तिकता परिहारणार्थम्। 5] कृतज्ञता प्रकाशनार्थम्।
	ख]	"श्रीवर्द्धमानं अर्हन्तं नत्वा बाल-प्रबुद्धये। विरच्यते - मितस्पष्ट - सन्दर्भ - न्यायदीपिका"। (पेज नं. 14)

P.T.O.

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

18.

ख)

→ "सर्वतो विशदं पारमार्थिक प्रत्यक्षम्"। यज्ज्ञानं साकल्येन स्पष्ट कुरु भवति। तत् द्विविधम्- विकलं, सकलंच। विकलं द्विविधम्- अवधिज्ञानं, मनः पर्ययज्ञानंच। सकलं एकविधम् - केवलज्ञानम्। विकल प्रत्यक्षम् यत्र मनुष्यं, देवं, तिर्यचं च गतियां अस्ति। एवं विशेषरूपस्य सम्यक्दृष्टि श्रावकाणां अवधिज्ञानं, मनः पर्ययज्ञान च अस्ति। केवलज्ञानम् अर्हन्त परमेष्ठीणां अस्ति।

(2)

19.

क)

→ स्वमते निश्चित साधनात् साध्य ज्ञानं स्वार्थानुमानम्। यथा- पर्वतोऽग्निर्धूमत्वादमिति। यस्य त्रिधा: भेदा सान्ति - 1) धर्मी:।
2) साधन।
3) साध्य।

(3)

1) धर्मी: - "धर्मी: गमस्येङ्गम्"। (पर्वत)

2) साधन - "तु गमकस्येव:"। (अग्नि)

3) साध्य - "तुअगमकस्येव:"। (धूम)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

30.

क)
→ विजिगीषु कथा - "वादीप्रतिवादीनोः स्वमतस्थापनार्थं जयपराजयपर्यन्तं परस्परं प्रवर्तमानो व्याख्यापारो विजिगीषु कथा। उभयोर्मध्ये विजिगीषुकथा वाद इति उच्यते"।

ख)
3 वीतरागकथा - "गुरुशिष्याणां विशिष्ट विदुषां वा रागद्वेषरहितानां तत्वनिर्णय पर्यन्तं परस्पर प्रवर्तमानो व्याख्यापारो वीतरागकथा। जयपराजयत् अभिप्राय रहितानां तत्व जिज्ञासा क्रियमाणा तत्वचर्चा वीतरागकथा इति भाव:।

BSER-166-2019

P.T.O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड-द

21. → नैयायिकाभिमतस्य प्रत्यक्ष प्रमाण मन्यते। इन्द्रियस्य पदार्थेन स्पर्शं ज्ञानं सन्निकर्ष कथ्यते। सन्निकर्ष तु अचेतन: प्रमीति भवान् न शक्योति।
द्वितीयं, इन्द्रियस्य पदार्थेन स्पर्शं ज्ञानं प्राप्यकारित्वं ~~आस्ति~~। तथा च इन्द्रियस्य पदार्थेन स्पर्शं ज्ञानं अप्राप्याकारित्वं अस्ति। चक्षुन्द्रियस्य अप्राप्यकारित्वं अस्ति। चक्षुन्द्रियस्य अप्राप्यकारित्वं प्रसिद्ध मेव। सन्निकर्षस्य प्रत्यक्ष प्रमाण समीचीनं नास्ति।

4

21. → "विशदप्रतिभासं प्रत्यक्षम"। विशद प्रतिभासं लक्षणं, प्रत्यक्षम् लक्ष्यं अस्ति। तद् द्विविधम् -
1) सांव्यवहारिकम्।
2) पारमार्थिकम्।

1) सांव्यवहारिक प्रत्यक्षम - "देशतो विशदं सांव्यवहारिक प्रत्यक्षम"। यज्ञान विशदमिष नैर्मल्यत्वं सांव्यवहारिकं प्रत्यक्षम। तद् चतुविधम् अवग्रह:, ईहा:, अवाय:, धारणा: च।

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

2) पारमार्थिक प्रत्यक्षम् - "सर्वतो विशदं पारमार्थिक प्रत्यक्षम्"। यज्ञान साकलेन स्पष्टं विशदमोष सर्वतो पारमार्थिक प्रत्यक्षम् । तद् द्विविधम् - सकलं, विकलं च। सकलं एक विधम् - केवलज्ञानम्। विकलं द्विविधम् - अवधिज्ञानम्, मनःपर्ययज्ञानम्।

22.
→ "परोपदेशमपेक्ष्य यत् साधनात् साध्यविज्ञानं परार्थानुमानम्"। यद् त्रिधा भेदाः सन्ति - 1) धर्मी।
2) साधनः।
3) साध्यः।

1) धर्मी: - "प्रसिद्धो धर्मी"। यथा पर्वतोऽयं धूमवत्त्वात् अग्निमिति।

(5) 2) साधन :- आचार्य अभिनव धर्मभूषण यतिः साधनस्य स्वरूपे न्यायदीपिका ग्रन्थस्य लिखितः - "निश्चित साधनात् अन्यथानुपपत्तिकं साधनम्"।

3) साध्य :- आचार्य अभिनव धर्मभूषण यतिः साध्यस्य स्वरूपे न्यायदीपिका ग्रन्थस्य लिखितः - "शक्यमभिप्रेतम् प्रसिद्धं साध्यम्"।

P.T.O.

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

22 → साध्यं - साध्यस्य स्वरूप लक्षणे आचार्य अभिनव धर्मभूषण यति : न्यायदीपिका ग्रन्थे लिखिति -
"शक्यम अभिप्रेतम प्रसिद्धं साध्यम्।"
अर्थात् शक्यम्, अभिप्रेतम्, प्रसिद्धं च साध्यम भवति।

~~इष्टम~~ आचार्य माणिक्यनंदी के अनुसार
"इष्टम बाधितम सिद्धं साध्यम।"
[परिक्षामुख] इति।

साधनं - साधनस्य स्वरूप लक्षणे आचार्य अभिनव धर्मभूषण यति : न्यायदीपिका ग्रन्थे लिखति -
"निश्चित् साध्यात् अन्यथानुपपत्तिकं सिद्धं साधनम्।" अर्थात् - निश्चित् साध्यात्, अन्यथा, अनुपपत्तिकं च साधनम भवति।

कुमारभट्टी के :
"अन्यथानुपपत्तिके लिङ्ग मतं"
[वादन्याय] इति।

BSER-166 2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

23.
→ "अविशद प्रतिभासं परोक्षम्।" अविशद प्रतिभासं लक्षणं, परोक्षम् लक्ष्यं अस्ति। तत् पञ्च विधम्-
1) स्मृतिः।
2) प्रत्यभिज्ञानम्।
3) तर्कः।
4) अनुमानम्।
5) आगमः।

1) **स्मृतिः** :- "तदित्याकारा प्रागनुभूत वस्तु विषया: स्मृतिः"। यथा- सः देवदत्तः।

2) **प्रत्यभिज्ञानम्** - "अनुभव स्मृति हेतुकं सङ्कलनात्मकं ज्ञानं प्रत्यभिज्ञानम्"। यथा - स एवाऽयं जिनदत्तः।

(4)

3) **तर्कः** :- — "व्याप्तिज्ञानं तर्कः"। तर्कस्य अपर नाम ऊहः अस्ति। यथा - यत्र यत्र धूमत्वं तत्र तत्र अग्निमितिः।

4) **अनुमानम्** — ~~साध्य~~ "साधनात् साध्यविज्ञानं अनुमानम्"। तत् द्विविधम् - स्वार्थानुमानम्, परार्थानुमानम् च।

5) **आगमः** — "आप्त वचनं निबन्धनं अर्थज्ञानम् आगमः।"

P.T.O.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

17. —खण्ड – स—

ख)

→ "श्रीवर्द्धमानंमर्हिनां नत्वा बाल-प्रबुध्ये।
विरच्यते- मित - स्पष्ट- सन्दर्भ- न्यायदीपिका।"

"महावीरं जिनं नत्वा बालानां सुख-बुद्धये।
'दिपिकायां' विशेषार्थ 'प्रकाशेन' प्रकाश्यते।"

प्रसङ्ग -: अस्मिन् श्लोके आचार्य अभिनव धर्मभूषण यति: मङ्गलाचरण करोति। न्यायदीपिकां ग्रन्थस्य लिखति।

सन्दर्भ:- आचार्य अभिनव धर्मभूषण यति: अतिकृता बालानां स्पष्ट रूपेण सन्दर्भ ददाति प्रवेश: करोति। न्यायदीपिका ग्रन्थ लिखति।

भावार्थ-: आचार्य अभिनव धर्मभूषण यति: श्री मङ्गलाचरणे श्री भगवान अर्हन्तं वर्द्धमानं नमस्कृत:। अतिकृता बालानां स्पष्टरूपेण लिखित श्री न्यायदीपिका ग्रन्थ अस्ति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

~~24~~ अस्साधारण धर्मवचनं भेवान् विलिख्य ? विवेच्यताम्।

24.
→ यो लक्षण नास्ति तथा च प्रतीति लक्षणाभास कथ्यते / कथ्यते। तत्र त्रिविधम् लक्षणाभास-

1) अव्याप्त लक्षणाभासम्।
2) अतिव्याप्त लक्षणाभासम्।
3) असम्भव लक्षणाभासम्।

1) अव्याप्त लक्षणाभासं - "लक्ष्य एक देश वृत्त्यो अव्याप्तम्" यथा - गो: शावलेयत्वम्।

2) अतिव्याप्त लक्षणाभासं - "लक्ष्य अलक्ष्य वृत्त्यो अतिव्याप्तम्" यथा - गो: पशुत्वम्।

3) असम्भव लक्षणाभासं - "बाधित लक्ष्य वृत्त्यो असम्भवि" यथा - नरस्य विषाणित्वम्, खरस्य विषाणित्वम्।

→←समाप्तम्→←

P. T. O.

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

DSER-166/2019

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-166/2019

79

उनयासी